कुत्तों का टीकाकरण एवं कृमिहरण

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र
संयुक्त निदेशालय प्रसार शिक्षा
भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243122 (उ. प्र.)

कुत्तों का टीकाकरण

कुत्तों में टीकाकरण बीमारियों को रोकने एवं उन्हें स्वस्थ रखने का सबसे आसान तरीका है। टीकाकरण बीमारी की आशंका से पहले संक्रमण के विरूद्ध प्रतिरक्षा प्रणाली को विकसित करने के लिए दिया जाता है। नियमित तौर पर अनेक टीके गंभीर संक्रामक बीमारी के विरूद्ध मुख्य बचाव के रूप में कुत्तों को दिए जाते हैं। मुख्य टीकों में शामिल है कैनाइनपारवो वाइरस, डिस्टेम्पर, हिपेटाइटीस, पैराइन्फ्ल्युंजा डी.एच.पी.पी.आई.युक्त और रेबीज। गैर–मुख्य टीको में लैप्टोस्पाइरा का टीका भी शामिल है। जहाँ वायरल आंत्र शोथ स्थानिक है वहाँ कोरोना वायरस के टीके की संस्तुति की जाती है।

टीका	प्रारम्भिक कुत्ते के बच्चे का टीका करण (16 सप्ताह से कम)	प्रारम्भिक वयस्क कुत्ते का टीकाकरण (16 सप्ताह के बाद)	बूस्टर की संस्तुति	टिप्पणियां
रेबीज	3 महीने की उम्र से पहले एक खुराक, पहले टीके के 21 दिन बाद एक खुराक	एक खुराक	वार्षिक	यह एक आवश्यक टीका है। रेबीज 100 प्रतिशत घातक बीमारी है और इसका कोई उपचार उपलब्ध नहीं
पारवोवायरस	6–8 सप्ताह , 9–11 सप्ताह और 12–14 सप्ताह की उम्र पर एक खुराक	3–4 सप्ताह के अन्तराल पर 2 खुराक	वार्षिक	यह एक आवश्यक टीका है। यह संक्रामक बीमारी है जिसमें उल्टी तथा खूनी दस्त होते हैं। और उपचार के अभाव में मृत्यु हो सकती है।
डिस्टेम्पर	6–8 सप्ताह , 9–11 सप्ताह और 12–14 सप्ताह की उम्र पर एक खुराक	3–4 सप्ताह के अन्तराल पर 2 खुराक	वार्षिक	यह एक आवश्यक टीका है। क्योंकि यह एक गम्भीर बीमारी है तथा अन्य शारीरिक समस्याओं के साथ स्थायी मास्तिष्क क्षति भी पहुँचाती है।
एडिनोवायरस (केनाइनहिपेटाइटीस)	6–8 सप्ताह , 9–11 सप्ताह और 12–14 सप्ताह की उम्र पर एक खुराक	3–4 सप्ताह के अन्तराल पर 2 खुराक	वार्षिक	यह भी एक आवश्यक टीका है। यह रोग खाँसी और छींक के माध्यम से फैलता है, और गम्भीर हृदय की क्षति एवं मौत का कारण हो सकता है।
पैराइन्फल्युएन्जा	6–8 सप्ताह , 9–11 सप्ताह और 12–14 सप्ताह की उम्र पर एक खुराक	3–4 सप्ताह के अन्तराल पर 2 खुराक	वार्षिक	यह एक वैकल्पिक टीका है। इस संक्रमण में खांसी और बुखार होता है अतः यह यह बोरडेटिला संक्रमण के साथ जुड़ा हो सकता है।
लेप्टोस्पाइरा	12 सप्ताह पर एक खुराक और 14–16 सप्ताह की उम्र पर दूसरी खुराक	2–4 सप्ताह के अन्तराल पर 2 खुराक	वार्षिक टीका सिर्फ बीमारी की अतिआंशका वाले क्षेत्रों के लिए संस्तुत है।	यह भी एक वैकल्पिक टीका है और मुख्य रूप से बीमारी की आंशका वाले क्षेत्रों में संस्तुत है। चूहों और संक्रमित पानी के संपर्क से संक्रमण हो सकता है।
कोरोनावायरस	6 सप्ताह पर एक खुराक उसके बाद हर 2–4 सप्ताह पर 12 सप्ताह तक की उम्र होने तक	1 खुराक यदि MLV, 2 खुराक, 2 सप्ताह के अन्तराल पर ,	वार्षिक टीका, सिर्फ बीमारी की अतिआशंका वाले क्षेत्रों के लिए संस्तुत है।	यह भी एक वैकल्पिक टीका है।

कुत्तों के लिए संस्तुत टीकाकरण अनुसूची

कुत्ते की उम्र	टीका	खुराक	टिप्पणियाँ
6–8 सप्ताह	डिस्टेम्पर, हिपेटाइटीस, पारवोवाइरस, पैराइन्फ्ल्युन्जा टीका (डी.एच.पी.पी.आई.) और कोरोनावायरस	डी.एच.पी.पी.आई–प्राथमिक कोरोना–प्राथमिक	स्थानिक क्षेत्रों में कोरोनावायरस टीके का प्रयोग करें
10–12 सप्ताह	डिस्टेम्पर, हिपेटाइटीस, पारवोवायरस पैराइन्फ्ल्युएन्जा, लेप्टोस्पाइरोसिस (डी.एच.पी.पी.आई.+ एल) और कोरोनावायरस	डी.एच.पी.पी.आई.–बूस्टर कोरोना–बूस्टर लेप्टोस्पाइरा–प्राथमिक	लेप्टोस्पाइरा के लिए पहला टीका दिया जाता है।
12–16 सप्ताह	डिस्टेम्पर, हिपेटाइटीस ,पारवोवायरस पैराइन्फ्ल्युएन्जा लेप्टोस्पाइरोसिस (डी.एच.पी.पी.आई. + एल) और कोरोनावायरस और रेबीज	डी.एच.पी.पी.आई.–बूस्टर कोरोना–बूस्टर लेप्टोस्पाइरा–प्राथमिक रेबीज–प्राथमिक	रेबीज के लिए पहला टीका दिया जाता है।
उसके बाद वार्षिक टीका करण दोहराएँ	डिस्टेम्पर, हिपेटाइटीस, पारवोवायरस पैराइन्फ्ल्युएन्जा लेप्टोस्पाइरोसि, (डी.एच. पी.पी.आई. + एल) कोरोनावायरस और रेबीज	वार्षिक बूस्टर	रोग–प्रतिरोधक क्षमता को बनाये रखने के लिए वार्षिक टीकाकरण आवश्यक है।

टीका करण के दौरान ध्यान में रखें जाने वाले महत्वपूर्ण बिन्दु

केवल स्वस्थ कुत्तों का टीकाकरण करे। टीकाकरण से पहले कृमिहरण का अनुसरण करें। सुबह या सांय के समय टीकाकरण करें। टीकाकरण के बाद तीन दिनों के लिए अपने कुत्ते को तनाव ज्यादा व्यायाम न दें।

कुत्तों में कृमिहरण

कुत्तों में पाए जाने वाले प्राथमिक आंत्र परजीवी हैं गोलकृमि, हुककृमि, विपवर्म तथा फिताकृमि। ये कृमि पाचनतंत्र को नुकसान पहुँचाते हैं और आवश्यक पोशक तत्वों के अवशोशण में हस्तक्षेप करते हैं। आमतौर पर ये कृमि लोगों में आंत संक्रमण का कारण नहीं है, हालांकि , हुकवर्म संक्रमण प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर देता है और पेट में दर्द का कारण होता है। गोलकृमि कालार्वाभी लोगों को संक्रमित करने की क्षमता रखता है। गोलकृमि अंडे से संक्रमित भोजन ग्रहण करने से आंत्र में लार्वा विकसित होने की संभावना के साथ ही संवेदनशील अंगो में इनका विस्थापन हो सकता है। बच्चों में तथा कमजोर एवं बूढ़े लोगों में कुत्तों द्वारा इस प्रकार के संक्रमण के होने की बहुत अधिक सम्भावना है। इसलिए नियमित रूप से कृमिहरण और साफ–सफाई इन परजीवी बीमारियों की रोकथाम के लिए महत्वपूर्ण है।

कुत्तों में कृमिहरण अनुसूची

कुत्तों का वर्ग	अनुसूची	सामान्यतः इस्तेमाल होने वाला कृमिहरण कारक
कुत्ते का बच्चा (पिल्ले)	· तीन महीने की उम्र तक हर दो सप्ताह पर। · तीन से छः महीने की उम्र तक महीने में एक बार। · छः महीने की उम्र के बाद तीन महीने में एक बार।	प्राजीक्वोंटल पाइरेंटलपामेट फेनबेन्डाजोल आइवरमेक्टीन मिलबीमाइसीन आक्सीम
वयस्क	· तीन महीने में एक बार	
प्रजनन शील मादा	· संभोग करने से पहले एक बार · प्रसव के दौरान एक बार · जन्म के बाद एक बार, जन्म के बाद दो सप्ताह पर एक बार · उसके बाद चार सप्ताह बाद · इसके बाद तीन महीने में एक बार	

- आमतौर पर एकल और कई दवाइयों का संयोजन व्यावसायिक रूप से उपलब्ध है।
- पशुचिकित्सक की परामर्श के बाद ही कृमिहरण कारकों का इस्तेमाल करें
- परजीवियों में दवा के विरूद्ध प्रतिरोधक क्षमता को उत्पन्न होने से बचाने के लिए हर दूसरी या तीसरी बार दवा को बदल लें।

विभिन्न आंतरिक परजीवीयों के विरूद्ध विभिन्न दवाओं और इनके संयोजन का प्रभाव

सामग्री	गोलकृमि	हुकवर्म	फिताकृमि	विपवर्म	हृदय कृमि	गर्भावस्था के दौरान सुरक्षित	कुत्ते की न्यूनतम आयु
पायरेंटल	+	+	–	–	–	नहीं	2 सप्ताह
प्राजीक्वोटल	–	–	+	–	+	नहीं	4 सप्ताह
प्राजीक्वोटल, पायरेंटलपामेंट, फेनबेन्डाजोल	+	+	+	+	–	नहीं	3सप्ताह
फेनबेन्डाजोल	+	+	+	+	–	हाँ	किसी भी समय
आइवरमेक्टीन, पायरेंटलपामेंएट	+	+	–	–	+	हाँ	6 माह
आइवरमेक्टीन	+	+	–	+	+	हाँ	6 माह
मीलबीमाइसीन	+	+	–	+	–	हाँ	4 सप्ताह
आइवरमेक्टीन, पायरेंटल प्राजीक्वोटल	+	+	+	–	+	नहीं	6माह

+ प्रभावकारी, – अप्रभावकारी

संरक्षण : **डा0 राज कुमार सिंह**
निदेशक, भ0कृ0अ0प0–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसांधन संस्थान, इज्जतनगर– 243122(उ0प्र0)

मार्गदर्शन: **डा0 महेश चन्द्र**
संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

लेखक : **डा0 उज्जवल कुमार डे**
वैज्ञानिक, रेफरल वेटनेरी पॉलीक्लीनिक

डा0 रूपसी तिवारी
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक

संपादन : **डा0 रूपसी तिवारी**
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसधांन संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क :
आई0वी0आर0आई0 हेल्पलाइन, 0581–2311111
किसान कॉलसेन्टरः 1800–180–1551
आई0 वी0 आर0 आई0 बेवसाइट : www.ivri.nic.in